भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

१९१. जनमे के टेढ़ी-मेढ़ी दुनो ओर बार,
इ बुझौवल जे ना बूझी, ऊहमार सार। (झींगा-मछरी)

१९२. जेतना डर बघवा के ना, ओतना डर टिपटिपवा के। (धोबी का गदहा भुलाइल)

१९३. कांच कसैली कच-कच करे, कांच कपारो घीव
सांचे बतिया प्रभु जी पूछे, कि धड़कन लागे जीउ।

१९४. अमर पर कमर पितमर पर छाया,
बाप रहले पेट में त पूत गइले गाया। (आग-धुँआ)

१९५. खैर सुपारी चूना पान, दूनो बेकत के बाइस कान। (बेकनउव्यक्ति)

१९६. छोटी-मोटी देवी मैया, दूनो काने सोनवा,
लाख जीव मार के, बइठल बाड़ी कोनवा। (बन्दूक)

१९७. नीचा से निकले सनासनी, ऊअर घनाघनी फरे पसेरी एहिसन,
गिरे गुरदेल एहिसन, खात में कपास एहिसन। (ताड़ का फर)

१९८. एक पेड़ कस्मीरा, कुछ लौंग फरे कुछ जीरा,
कुछ कांकर फरे, कुछ खीरा। (महुआ)

१९९. चार खण्ड के पोखरा, ओहिमा राजा तूर
पहिले लागे बतिया, पाछे लागे फूल। (दीपक)

२००. सात सतहवा ऊाल तिनडेढ़िया गइल दूर
का सास तू हाँड़ी टकटोर, पोंछी-मूड़ी बा घूर।

२०१. हेती चुक टुइयाँ, पटक देब भुइयाँ
फूटे ना फाटे, बाह रे टुइयाँ। (कसैली)

२०२. बारह बरिस रहनी नैहर में, तब ना बढ़वनी केस,
हाथ -गोड़ छितिर-बितिर, छुट गइल परदेश।

२०३. माड़ो जर गए, दुलहा मर गए कन्या भइ एहवाती,
सखिया मिल-जुल मंगल गावे हर्ष चले बरिआती। (सीता-स्वयंवर प्रसंग)

२०४. ऊअर के खाईं नीचा के फेंक दीं, नीचा के खाईं ऊअर के फेंक दीं। (छुहड़ा, बादाम)

२०५. दस भुज नारि सोचे दिन-राती, होइहें पुत्र मोर जीउघाती। (केंकड़ा)

२०६. चल रे सखी जहवाँ नदी-नारा होखे, पानी ना होखे तहवाँ
चल रे सखी जहवाँ, पेड़-पौधा होखे, छेंह ना होखे तहवाँ।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

२०७. देखनी ए छौंड़ी तोर भतार, कमर में बिस्टी, टीकल कपार।

२०८. कौन स्त्री पति ने नहीं देखा - (विधवा स्त्री)

२०९. एक गइनी दूकठ गइनी, गइनी कलकत्तवा।
बत्तीस गो पेड़ मिलल, एगो पत्तवा। (एगोउएक) (जीभ)

२१०. भइंस चढ़े खजूर पर लप-लप गुलर खाय,
भइंस के मारीं डंटा से त भइंस बिआए गाय।

२११. सब जने के जर एके जगह । (लहसुन)

२१२. माथे मोटरी मुँहे लकड़ी। (चूल्हा)

२१३. लबर-लबर डालेनी, फुला के निकालेनी। (रोटी)

२१४. एक मरे कि दस? (एक आदमी दस व्यक्ति के परिवार को खिलाता है)

२१५. हाँ-हाँ-हाँ-हाँ, हाथ गोड़ दू माहाँ
पीठी पर पोंछ जामल इ तमासा कहाँ? (तराजू)

२१६. बादर से बदरी भए, कमरी से भए लोई,
सैया से भैया भए, अब लागों ननदोई।

२१७. एक नारि नारंगी, वह भी नारि कहावे
भाँति -भाँति कपड़ा पेन्हे लोगन के तरसावे। (प्याज)
बे बिआ के फल। (कसैली)

२१८. झगरु दादा खड़े खेत में बटुए में रखते माल,
मांगोगे तो कभी न देंगे, फांड में भर लो माल। (रहिला/चना)

२१९. लादू बैठा चले घाट पे चोरी करने माल,
खेत में देख बरछी ताने खड़े बहादुर लाल। (जव के बाल का टूँड़, जो नोकीला होता है)

२२०. हेती चुके डेंड़ा डरार बान्हेला। (सूई)

२२१. भुजवा खइले मउनिया फेंक देहले। (बेल/सिरफल)

२२२. हेती चुकी स्त्री, रहरिया में ढूकी। (खुरपी)

२२३. बुद्धि के गाछ कहाँ होला? (सत्संग, स्कूल)

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

२२४. ए तर वाला! त का ऊर वाला?
ठेहुना पर ले नाक वाला आवऽ ता।
तू डेराऽ तहार लटकल बा। (तर वाला उ आलू, ऊर वाराउ भंटा, नाक वालाउहाथी)

२२५. दू बाप, दू बेटा, तीन कोठरी। हरेक में बराबर-बराबर, सोना है, कैसे सोयेंगे? (बाबा, बाप, बेटा)

२२६. तीन अक्षर के मेरा नाम, करता हूँ मैं कोर्ट में काम। (कलम)

२२७. हती चुकी चुकिया में तीन बचवा, दखिन पछिम के घाम लागी उड़ी बचवा। (रेंड़ी)

२२८. हती चुकी गाजी मिया हतवत पोंछ।
भागल जाले गाजी भैया, धरऽ लइका पोंछ। (सूई-डोरा)

२२९. लाल इंगरौटी, करिया घेंटी, बूझऽ हो महतारी बेटी। (जामुन)

२३०. कपड़े का अन्त गुलनार में रंगा गया, उस कपड़े का नाम बताओ। (चिरकुट लाल, गुलनारउलालरंग)

२३१. लाल लगाया, उजर निकाला, कहाँ पढ़े हो, सिलाटैट की किताब में। (गेहूँ, आटा, सिलालैटउचक्की)

२३२. एक हाथ के डंडा, जब बुढ़वा हाथ चलाई तब लागी ठंडा। (पंखा)

२३३. सब फूल में अच्छा कौन? (कपास - जन्म से मरन तक साथ देता है)।

२३४. लकड़ी में कौन लकड़ी जो मरने तक काम देता है। (बांस, जन्म के समय सूप में बच्चा आता है)।

२३५. कच्चा खाओ, पक्का खाओ, सब्जी और सलाद बनाओ, रोज उसके पेट में जाता, लाल बुझक्कड़ इसे बताता। (टमाटर)

२३६. हती चुकी बाछी छान गइल गाछी। (गिलहरी)

२३७. बुढ़वा के बुढ़िया घिसिअवले जाय। (पोतन)

२३८. हम हईं कोहइन, पिता चमार, बेटा हवन पाठा-काछा
पतोहिया बन के चेर, चारो आदमी के लागल बा मेल। (पहलवान के बेटा)

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.